कार्तिलपारा गुवाहाटी-११

आक्रामकता एवं हिंसा B.A-I-(H)

AGGRESSION & VIOLENCE. PAPER-II.

वर्तमान समय आक्रामकता तथा सामाजिक हिंसा सर्व और व्यापक हो गई है। आज प्रत्येक देश व समाज इस समस्या से जूझ रहे हैं। देश व समाज में रह-रहकर आक्रामकता एवं हिंसा की घटनाएँ घटती रहती हैं। इसके अलावा, व्यक्तिगत व्यवहार में भी आक्रामकता, लड़ाई, लूटपाट एवं हत्या की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं।

आक्रामकता एवं हिंसा को समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख करना आवश्यक है।

1. मिरोले :— "किसी को क्षति पहुँचाने के लिए प्रेरित व्यवहार को आक्रामकता कहते हैं। उससे नुकसान हो भी सकता है और नहीं भी।"

2. मायर्स :— "आक्रामकता ऐसा मौखिक व शारीरिक व्यवहार है जो किसी को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है।"

3. हिलगार्ड :— "आक्रामकता वह व्यवहार है जिसमें किसी व्यक्ति को (शारीरिक या मौखिक रूप) से चोट पहुँचाना है या सम्पत्ति को नष्ट करना होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार है जो किसी व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने, उसे ठेस

पहुँचाने या उसकी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है। संक्षेप में आक्रामकता की विशेषताएं निम्न हैं:

1. उद्देश्यपूर्ण व्यवहार :— आक्रामकता एवं हिंसा उद्देश्यपूर्ण होती है। व्यक्ति ऐसे व्यवहार जानबूझ कर करता है ताकि दूसरा व्यक्ति पीड़ित या क्षतिग्रस्त हो या उनको नुकसान पहुँचे।

2. सार्वभौमिक गोचर :— आक्रामकता व हिंसा आज हर देश की समस्या बन चुकी है। किसी न किसी रूप में हर समाज में इसका तांडव देखने को मिल रहा है।

3. हानिकारक व्यवहार :— आक्रामकता व हिंसा हानिकारक व्यवहार है। हानि पहुँचाने का कार्य (शारीरिक या मौखिक) भी हो सकता है।

4. पीड़ित व्यक्ति द्वारा बचाव :— चूंकि आक्रामकता तथा हिंसा से लोगों को नुकसान पहुँचता है व पीड़ा का अनुभव करता है इसीलिए वे ऐसे व्यवहार से बचाव का प्रयास करते हैं।

5. सक्रिय या निष्क्रिय :— आक्रामकता का प्रदर्शन सक्रिय या निष्क्रिय रूप में भी हो सकता है। किसी को शीघ्र चोट पहुँचाना सक्रिय आक्रामकता है जब कि किसी के मार्ग में बाधा पैदा करना निष्क्रिय आक्रामकता है।

6. वैयक्तिक भिन्नताएँ :— ऐसा नहीं है कि ~~आक्रामता~~ आक्रामकता की प्रवृति किसी में पाई जाती है किसी में नहीं पायी जाती है। यह सभी में पाई जाती है लेकिन सभी में भिन्न-भिन्न रूपों में पायी जाती है अर्थात इसमें भी वैयक्तिक भिन्नताएँ प्रदर्शित होती है।

Next day

Hrishi Kesh lal
Deptt - Psychology
B.M.C. Rahika